45 Chapter

विश्वविद्यालय पुस्तकालय में पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका

सीमा कुमारी[1], श्रद्धा कल्ला[2], नंदन सिंह[3]

[1]सहायक पुस्तकालयाध्यक्षआईआईएचएमआर विश्वविद्यालय, जयपुर
[2]पुस्तकालयाध्यक्षआईआईएचएमआर विश्वविद्यालय, जयपुर
[3]सहायक पुस्तकालयाध्यक्षआईआईएचएमआर विश्वविद्यालय, जयपुर

Summary

विश्वविद्यालय पुस्तकालय को किसी भी उच्च शिक्षण संस्था का बौद्धिक एवं अकादमिक केंद्र माना जाता है। इस केंद्र की प्रभावशीलता बहुत हद तक पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका और कार्यकुशलता पर निर्भर करती है। पूर्व में पुस्तकालयाध्यक्ष की पहचान मुख्यतः पुस्तकों के संग्रह और संरक्षण तक सीमित थी, किंतु वर्तमान समय में यह भूमिका व्यापक और बहुआयामी हो गई है। डिजिटल सूचना संसाधनों की बढ़ती उपलब्धता, शोध गतिविधियों में वृद्धि तथा उपयोगकर्ताओं की बदलती अपेक्षाओं ने पुस्तकालयाध्यक्ष को सूचना प्रबंधक, शोध सहायक, प्रशिक्षक और अकादमिक साझेदार के रूप में स्थापित किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में विश्वविद्यालय पुस्तकालय में पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका का यथार्थपरक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है, जिसमें उनकी पारंपरिक जिम्मेदारियों के साथ-साथ आधुनिक दायित्वों, आवश्यक कौशलों, समकालीन चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है।

Keywords: विश्वविद्यालय पुस्तकालय, पुस्तकालयाध्यक्ष, सूचना साक्षरता, डिजिटल संसाधन, शोध सहयोग

भूमिका

उच्च शिक्षा प्रणाली का मूल उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं है, बल्कि छात्रों में आलोचनात्मक चिंतन, शोध प्रवृत्ति तथा आजीवन अधिगम की क्षमता विकसित करना भी है। इस उद्देश्य की पूर्ति में विश्वविद्यालय पुस्तकालय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। पुस्तकालय वह स्थान है जहाँ ज्ञान का संकलन, संगठन और प्रसार व्यवस्थित रूप से किया जाता है। पुस्तकालयाध्यक्ष इस पूरी व्यवस्था के केंद्र में कार्य करते हैं। यद्यपि एस. आर. रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित पुस्तकालय विज्ञान के पाँच नियम लगभग एक शताब्दी पूर्व प्रस्तुत किए गए थे, फिर भी उनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। अंतर केवल इतना है कि समय के साथ पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका अधिक सक्रिय, तकनीकी और उपयोगकर्ता-केंद्रित हो गई है।

विश्वविद्यालय पुस्तकालय का स्वरूप एवं उद्देश्य

विश्वविद्यालय पुस्तकालय का प्रमुख उद्देश्य शिक्षण, अधिगम और शोध के लिए विश्वसनीय एवं अद्यतन सूचना संसाधन उपलब्ध कराना है। आधुनिक विश्वविद्यालय पुस्तकालय अब केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि वे डिजिटल एवं हाइब्रिड स्वरूप में कार्य कर रहे हैं। इनकी प्रमुख विशेषताओं में मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का संतुलन, ई-जर्नल्स और डेटाबेस की उपलब्धता, डिजिटल रिपॉजिटरी, तथा उपयोगकर्ता सहायता सेवाएँ शामिल हैं। इन सभी गतिविधियों के सफल संचालन के लिए एक सक्षम और दूरदर्शी पुस्तकालयाध्यक्ष की आवश्यकता होती है।

विश्वविद्यालय पुस्तकालय में पुस्तकालयाध्यक्ष की पारंपरिक भूमिका

पारंपरिक रूप से विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका को प्रशासनिक और तकनीकी कार्यों तक सीमित माना जाता था। उनके प्रमुख दायित्वों में पुस्तक एवं पत्रिका चयन, वर्गीकरण और सूचीकरण, संदर्भ सेवाएँ प्रदान करना, पुस्तकालय नियमों का पालन सुनिश्चित करना तथा सूचना संसाधनों का संरक्षण शामिल था। इन कार्यों के माध्यम से पुस्तकालय को एक सुव्यवस्थित और अनुशासित सूचना केंद्र के रूप में विकसित किया गया।

बदलते शैक्षणिक परिदृश्य में पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने पुस्तकालय सेवाओं के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। परिणामस्वरूप पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका भी पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़ चुकी है।

सूचना प्रबंधक के रूप में भूमिका

आधुनिक पुस्तकालयाध्यक्ष विभिन्न प्रकार के सूचना संसाधनों का चयन, मूल्यांकन और प्रबंधन करते हैं। इनमें मुद्रित पुस्तकों के साथ-साथ ई-बुक्स, ई-जर्नल्स और ऑनलाइन डेटाबेस भी शामिल हैं। संसाधनों की गुणवत्ता और प्रासंगिकता सुनिश्चित करना उनका प्रमुख उत्तरदायित्व होता है।

डिजिटल पुस्तकालय एवं ई-संसाधन प्रबंधन

डिजिटल पुस्तकालयों के विकास के साथ पुस्तकालयाध्यक्ष को तकनीकी दक्षता की आवश्यकता होती है। संस्थागत रिपॉजिटरी, ओपन एक्सेस प्लेटफॉर्म और लाइसेंस प्राप्त डेटाबेस का प्रबंधन अब पुस्तकालय कार्य का अभिन्न अंग बन चुका है।

शोध सहयोगी के रूप में भूमिका

विश्वविद्यालयों में शोध गतिविधियों के विस्तार के साथ पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका शोध सहयोगी के रूप में भी उभरी है। वे शोधार्थियों को साहित्य समीक्षा, शोध डेटाबेस के उपयोग, संदर्भ प्रबंधन उपकरणों तथा शोध नैतिकता के विषय में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इससे शोध की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में वृद्धि होती है।

सूचना साक्षरता प्रशिक्षक

आज के सूचना-संपन्न वातावरण में उपयोगकर्ताओं को सही और प्रामाणिक सूचना की पहचान करना सिखाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। सूचना साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से पुस्तकालयाध्यक्ष छात्रों को सूचना के नैतिक और प्रभावी उपयोग के लिए प्रशिक्षित करते हैं।

शैक्षणिक भागीदार के रूप में भूमिका

पुस्तकालयाध्यक्ष शिक्षकों के साथ मिलकर पाठ्यक्रम विकास, ई-लर्निंग सामग्री निर्माण और अकादमिक गुणवत्ता सुधार में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इस सहयोग से शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया अधिक समृद्ध बनती है।

शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक प्रकृति का है तथा इसमें वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान से संबंधित पुस्तकों, शोध-पत्रों, नीति दस्तावेजों तथा 2022 से 2025 के मध्य प्रकाशित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय जर्नल लेखों की समीक्षा की गई है। उपलब्ध साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से विश्वविद्यालय पुस्तकालय में पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका का समग्र मूल्यांकन किया गया है।

आवश्यक कौशल एवं दक्षताएँ

एक प्रभावी विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष के लिए तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ मानवीय और व्यावसायिक कौशल भी आवश्यक हैं। इनमें सूचना प्रौद्योगिकी का ज्ञान, शोध सहायता क्षमता, संचार कौशल, नेतृत्व क्षमता तथा उपयोगकर्ता आवश्यकताओं को समझने की दक्षता प्रमुख हैं।

समकालीन चुनौतियाँ

विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्षों को वर्तमान समय में कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सीमित बजट, तेजी से बदलती तकनीक, उपयोगकर्ताओं की बढ़ती अपेक्षाएँ, डिजिटल विभाजन और मानव संसाधनों की कमी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इनका समाधान निरंतर प्रशिक्षण, नवाचार और संस्थागत सहयोग के माध्यम से किया जा सकता है।

भविष्य की संभावनाएँ

आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रिसर्च डेटा मैनेजमेंट और ओपन साइंस जैसे क्षेत्रों में पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगी। विश्वविद्यालयों में ज्ञान आधारित समाज के निर्माण में पुस्तकालयाध्यक्ष रणनीतिक भागीदार के रूप में उभरेंगे।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालय पुस्तकालय में पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका निरंतर विकसित हो रही है। वे अब केवल सूचना संरक्षक नहीं, बल्कि शिक्षण, शोध और नवाचार प्रक्रिया के सक्रिय सहभागी बन चुके हैं। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और शोध उत्कृष्टता सुनिश्चित करने में पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका अनिवार्य है।

संदर्भ

1. Brewerton, A. (2022). Academic libraries and evolving research support services. Library Management.
2. IFLA. (2023). Global vision and academic libraries. International Federation of Library Associations.
3. Kumar, K., & Singh, R. (2024). Changing role of librarians in digital universities. DESIDOC Journal of Library & Information Technology, 44(2).
4. Ranganathan, S. R. (1931). The five laws of library science. Madras Library Association.
5. Tenopir, C., et al. (2023). Research data services and academic libraries. Journal of the Association for Information Science and Technology.
6. UNESCO. (2022). Reimagining the role *of libraries in higher education*.